5

यीशु ने बपतिस्मे के लिए लोगों की अगुआई की

''... फरीसियों ने सुना ... कि यीशु यूहन्ना से अधिक चेले बनाता है, और उन्हें बपतिस्मा देता है। (यद्यपि यीशु आप नहीं, बरन उसके चेले बपतिस्मा देते थे)'' (यूहन्ना 4:1, 2)।

अपनी सेवकाई आरम्भ करते हुए, यीशु ने समझाया कि समय पूरा हुआ है (अर्थात परमेश्वर के लिए मसीह और राज्य के बारे में की गई भविष्यवाणियों को पूरा करने का समय आ पहुंचा है, मरकुस 1:14, 15)। उसने लोगों को कहा कि ''मन फिराओ क्योंकि स्वर्ग का राज्य निकट आ गया है'' (मत्ती 3:1, 2; 4:17)। उसकी सेवकाई के द्वारा जो यूहन्ना की सेवकाई से बढ़ गई थी बहुत से लोगों ने उसकी बात मानकर बपतिस्मा लिया (यूहन्ना 3:22; 4:1)।

शास्त्र में इस बात की पूरी जानकारी नहीं दी गई है कि यीशु ने बपतिस्मा लेने के लिए अगुआई क्यों की; परन्तु यूहन्ना के बपतिस्मे के उद्देश्य की पर्याप्त जानकारी दी गई है। उनकी सेवकाइयों की तुलना करके हम सर्वमान्य निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि जिस बपतिस्मे की यीशु शिक्षा देता था वह यूहन्ना द्वारा सिखाए बपतिस्मे से भिन्न नहीं था।

वही संदेश

मत्ती 3:2 और लूका 3:3 सुसमाचार के वृत्तांतों को मिलाकर निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि यूहन्ना स्वर्ग के आने वाले राज्य के साथ-साथ पापों की क्षमा के लिए मन फिराव के बपतिस्मे का प्रचार करता था। इसलिए उसकी बात मानकर बपतिस्मा लेने वाले अपने पापों की क्षमा के लिए मन फिराकर बपतिस्मा ले रहे थे।

राज्य के बारे में यूहन्ना और यीशु के संदेश को मानने वाले लोगों ने ही बपतिस्मा लिया

था, इसलिए उन्होंने एक ही संदेश को माना होगा। यूहन्ना ने मन फिराव का प्रचार किया और यीशु ने भी यही प्रचार किया। यूहन्ना लोगों को आने वाले राज्य के लिए तैयार कर रहा था और यीशु भी वही कर रहा था। यूहन्ना ने पापों की क्षमा के लिए मन फिराव के बपतिस्मे का प्रचार किया; परन्तु बपतिस्मे और पापों की क्षमा पर यीशु के प्रचार के सम्बन्ध में जानकारी नहीं दी गई। यूहन्ना और यीशु दोनों ही लोगों को बपतिस्मे तक लेकर आए। यदि यीशु और यूहन्ना की शिक्षा दूसरे सभी पहलुओं में समान थी, तो क्या इसमें यह बात नहीं होगी कि उन्होंने एक ही संदेश अर्थात पापों की क्षमा के लिए बपतिस्मे का प्रचार किया, क्योंकि स्वर्ग का राज्य निकट था?

स्वर्ग का राज्य या परमेश्वर का राज्य (मत्ती 4:17; मरकुस 1:15) जिसके निकट होने का यीशु और यूहन्ना दोनों ने प्रचार किया, धर्म का राज्य होना था (रोमियों 14:17)। इसमें प्रवेश करने वालों के लिए मन फिराने अर्थात जीवन बदलने, पापों की क्षमा के लिए नए जीवन की आवश्यकता है (प्रेरितों 26:18; कुलुस्सियों 1:13)। लोगों को मन फिराने और बपतिस्मा लेने के लिए कहकर यूहन्ना और यीशु उस नये जन्म के लिए तैयार कर रहे थे जिससे उन्हें आने वाले राज्य में प्रवेश मिलना था (यूहन्ना 3:5)। दोनों के लक्ष्य एक ही थे और उनके वचन को ग्रहण भी वैसे ही किया गया था इसलिए यह निष्कर्ष कि वे एक ही संदेश का प्रचार कर रहे थे, काफी ठोस लगता है।

एक ही उद्देश्य

क्या यीशु के संदेश और बपतिस्मे का उद्देश्य यूहन्ना के संदेश और बपतिस्मे से अलग होगा? यीशु घूम घूम कर यह दावा नहीं कर रहा था कि वह मसीह अर्थात परमेश्वर का पुत्र है, बेशक जब लोगों ने इस सच्चाई को मान लिया तो उसने इसे स्वीकार किया (मत्ती 16:16, 17; यूहन्ना 4:25, 26; लूका 22:67–70)। उसने उनकी ताड़ना अवश्य की कि वे किसी को न बताएं (मत्ती 16:20)। यह स्पष्ट है कि यूहन्ना के बपतिस्मे की तरह उसका बपतिस्मा भी आने वाले मसीह में विश्वास पर आधारित था, परन्तु मसीहा अर्थात परमेश्वर के पुत्र के रूप में यीशु पर नहीं।

यूहन्ना और यीशु से बपतिस्मा लेने वाले लोग उनके चेले बन गए (यूहन्ना 4:1)। उनके द्वारा सिखाया गया था और वे उनके संदेश से जुड़कर उनके अनुयायी बन गए थे। वे मसीह को स्वीकार करने और उसके राज्य में प्रवेश करने को तैयार थे।

यीशु की सफलता

कुछ लोगों का विचार है कि पानी के बपतिस्मे के लिए यीशु ने *नहीं केवल* यूहन्ना ने ही ज़ोर दिया था, परन्तु बपतिस्मा लेने के लिए लोगों को मनाने में यीशु अधिक सफल रहा। फरीसियों ने सुना कि यीशु यूहन्ना से अधिक चेले बना रहा था (यूहन्ना 4:1)। यह सत्य था या नहीं, परन्तु हमें यह निष्कर्ष निकालना होगा कि यीशु के पीछे बपतिस्मा लेने वाले लोगों की बहुत बड़ी भीड़ थी।

यीशु के लिए बपतिस्मे का महत्व

इस बात से कि यीशु ने स्वयं किसी को बपतिस्मा नहीं दिया, यीशु की नज़र में बपतिस्मे का महत्व कम नहीं हो जाता। उसने बहुत से लोगों को बपतिस्मे के लिए मनाया (यूहन्ना 4:1)। जो यह संकेत देता है कि यीशु लोगों को बपतिस्मा लेने के लिए कह रहा था। यदि यीशु उन्हें बपतिस्मा लेने के लिए कह ही नहीं रहा था तो वे उसके पास बपतिस्मा लेने के लिए क्यों आते?

कुछ लोग यूहन्ना के कथन ''मैं तो पानी से तुम्हें मन फिराव का बपतिस्मा देता हूं, परन्तु जो मेरे बाद आने वाला है, ... वह तुम्हें पवित्र आत्मा और आग से बपतिस्मा देगा'' (मत्ती 3:11) का अर्थ यह लेते हैं कि यूहन्ना सिखा रहा था कि यीशु पानी के बपतिस्मे को कम महत्व देगा या नई वाचा में इसकी भूमिका कम कर दी जाएगी। यूहन्ना यह सिखाने की कोशिश *नहीं* कर रहा था कि पानी के बपतिस्मे का कोई महत्व नहीं है। बल्कि, वह अपने बाद आने वाले की महानता पर जोर दे रहा था। उसने वह करने के अर्थात पवित्र आत्मा और आग में डुबोने के योग्य होना था जो यूहन्ना नहीं कर सका था। यदि स्त्रियों से जन्म लेने वालों में से सबसे बड़ा अर्थात यूहन्ना (मत्ती 11:11) उसकी जूती उठाने के योग्य नहीं था, तो अवश्य ही उसके बाद आने वाला उससे बहुत महान होगा।

यदि यीशु पानी के बपतिस्मे को महत्वहीन मानता, तो वह स्वयं पानी का बपतिस्मा लेने के लिए यूहन्ना से न कहता, उसने माना कि यह स्वर्ग की ओर से निर्देश पर आधारित था (लूका 20:1-28), दावा किया कि पानी के बपतिस्मे से इन्कार करने वाले लोग परमेश्वर की युक्ति को नकार रहे थे (लूका 7:30) या बहुत से लोगों को बपतिस्मा लेने के लिए तैयार किया (यूहन्ना 4:1)। यदि यूहन्ना को पानी का बपतिस्मा देने के लिए भेजा गया था और उसने भी जो उससे बड़ा था लोगों को बपतिस्मा दिलाने के लिए कहा, तो अवश्य ही परमेश्वर ने पानी के बपतिस्मे को महत्वपूर्ण स्थान दिया है।

मन फिराव व व्यवस्था

यह तथ्य कि यूहन्ना और यीशु ने मन फिराव का प्रचार किया (मत्ती 3:8; 4:17) संकेत देता है कि मन फिराव बपतिस्मे की उनकी शिक्षा से जुड़ा हुआ था। अभी नई वाचा यीशु के लहू से अर्पित नहीं की गई थी (इब्रानियों 9:16, 17) और पुरानी वाचा ही लागू थी। इसलिए, मन फिराव का अर्थ यूहन्ना और यीशु की ओर मुड़ने वाले लोगों से सीनै पर्वत पर मूसा को दी गई उस पुरानी वाचा से अधिक धर्मी जीवन व्यतीत करने की अपेक्षा थी जिसके अधीन वे रह रहे थे। उस समय परमेश्वर की केवल वही व्यवस्था प्रभावी थी। नई वाचा की शर्तों के अनुसार सावधानीपूर्वक जीवन व्यतीत करने के लिए मन फिराव का अर्थ किसी का अपने जीवन को बदलना नहीं हो सकता था, क्योंकि नई वाचा अभी लागू नहीं हुई थी (इब्रानियों 9:16, 17)।

अपनी निजी सेवकाई के दौरान, यीशु ने यहूदियों को व्यवस्था का पालन करने का निर्देश दिया। उसने धनी शासक से आज्ञाओं का पालन करने के लिए (मत्ती 19:17) और

शुद्ध होने वाले कोढ़ियों से अपने आपको याजक के सामने दिखाने और मूसा द्वारा ठहराई भेंट चढ़ाने के लिए कहा (मत्ती 8:4)। यूहन्ना और यीशु दोनों ही यहूदियों को पुरानी वाचा का गंभीरतापूर्वक पालन करने को कहते थे। उनके द्वारा परिवर्तित लोगों को अभी भी अपने पापों की क्षमा के लिए बलिदान चढ़ाने की आवश्यकता थी (लैव्यव्यवस्था 4:31) जिसकी पहली वाचा में मूसा ने आज्ञा दी थी। ऐसे बलिदान जिनसे पाप क्षमा नहीं हो सकते थे (इब्रानियों 10:1-4), यीशु की मृत्यु के द्वारा बीच में से उठाकर उनके स्थान पर एक दूसरी वाचा दे दी गई थी (इब्रानियों 10:9)। पहली वाचा के अधीन रहने वालों के लिए क्रूस पर यीशु की मृत्यु से पापों की क्षमा सम्भव बना दी गई (इब्रानियों 9:15; गलतियों 4:5)।

यूहन्ना और यीशु द्वारा सिखाए गए बपतिस्मे के अलावा पुराने नियम के बलिदान पापों की क्षमा के लिए यीशु के लहू पर निर्भर थे। यूहन्ना और यीशु का बपतिस्मा लेने वालों की तरह (मरकुस 1:4; लूका 3:3) जानवरों के बलिदान भेंट करने वालों के पाप भी क्षमा किए जाते थे (लैव्यव्यवस्था 4:20, 26, 31, 35; 5:10, 13, 16, 18; 6:7; 19:22; गिनती 14:19; 15:22-28; भजन 78:38; 32:5; 85:2; 2 शमूएल 12:13)। परन्तु ऐसी क्षमा उन्हें उस राज्य में प्रवेश नहीं करा सकती थी जो अभी आया ही नहीं था (मत्ती 4:17; 10:7)।

पिन्तेकुस्त के दिन श्रद्धालु यहूदियों को पतरस ने निर्देश दिया (प्रेरितों 2:5) कि उनमें से *हर एक* मन फिराए और अपने-अपने पापों की क्षमा के लिए यीशु मसीह के नाम में बपतिस्मा ले (प्रेरितों 2:38)।

यूहन्ना को काफी सफलता मिली थी (मत्ती 3:5) और यीशु तो बहुत से लोगों को बपतिस्मा देकर शायद उससे भी सफल रहा था (यूहन्ना 4:1)। पतरस के मुख से यह सुनने के लिए कि *हर एक* मन फिराकर बपतिस्मा ले, ये लोग वही होंगे। उस दिन बपतिस्मा लेने वाले तीन हज़ार लोगों में से अधिकतर वही होंगे जिन्हें यूहन्ना और यीशु ने इस महान काम के लिए तैयार किया था। वरना यह निष्कर्ष निकाला जाना चाहिए कि आने वाले राज्य के लिए किसी ने भी लोगों को तैयार नहीं किया, और जिन लोगों से पतरस और प्रेरित बात कर रहे थे उनमें से किसी को भी मन फिराने और बपतिस्मा लेने की आवश्यकता *नहीं* थी, बेशक पतरस ने कहा कि उन्हें आवश्यकता थी।

जो लोग राज्य में हैं वे वे लोग हैं जिन्हें नई वाचा का बपतिस्मा दिया गया है, जो यूहन्ना और यीशु के प्रचार के समय प्रभावी नहीं थी। इसलिए, तैयारी का बपतिस्मा लेने वालों को एक और बपतिस्मा लेने की उम्मीद होगी जो उन्हें राज्य में जन्म दिला सकता है।

सारांश

बेशक पानी का बपतिस्मा सब कुछ नहीं है, परन्तु यूहन्ना और यीशु के चेले बनने वालों के लिए यह एक महत्वपूर्ण शर्त होगी। बपतिस्मा लेने में असमर्थ लोगों ने संकेत दिया कि वे न तो मन फिरा रहे थे और न ही यूहन्ना और यीशु द्वारा प्रचार किए जाने वाले परमेश्वर के संदेश पर विश्वास कर रहे थे। इसलिए, वे अपने लिए परमेश्वर की मंशा को ठुकरा रहे थे (लूका 7:30)। इस कारण, वे आने वाले मसीह और उसके राज्य को स्वीकार

करने के लिए तैयार नहीं थे। दूसरी ओर जिन्होंने इस बपतिस्मे को माना था वे यीशु का प्रभु और मसीह के रूप में प्रचार होने पर उस पर विश्वास करने के लिए और उसके राज्य में जन्म लेने के लिए तैयार थे।

ऐसा लगता है कि यूहन्ना और यीशु दोनों ही पापों की क्षमा के लिए मन फिराव के बपतिस्मे का प्रचार कर रहे थे क्योंकि स्वर्ग का राज्य निकट था (मत्ती 3:2; 4:17)। जिस बपतिस्मे का यीशु ने प्रचार किया उसका महत्व और उद्देश्य उतना ही महत्वपूर्ण था जितना यूहन्ना द्वारा प्रचार किए गए बपतिस्मे का।